शोध पत्र शीर्षक: बनारस की पारंपरिक शिल्प में रशियन डॉल्स का समावेश

सुश्री उमा कुमारी[1], प्रो. निरुपमा सिंह[2]

[1,2]दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

सारांश

बनारस की पहचान न केवल इसके घाटों और मंदिरों से है, बल्कि यहाँ की समृद्ध लोककला और हस्तशिल्प परंपरा भी उतनी ही खास है। लकड़ी के खिलौने बनाना यहाँ की एक पुरानी और जीवंत परंपरा रही है। ये खिलौने पूरी तरह हाथ से बनाए जाते थे, जिनमें जानवरों, देवी-देवताओं और आम जीवन से जुड़ी चीज़ों का सुंदर चित्रण होता रहा है।

समय के साथ इस परंपरा ने एक नया मोड़ लिया, जब बनारस में रशियन मैट्र्योश्का डॉल्स जैसे खिलौनों का निर्माण शुरू हुआ। पहले ये डॉल्स रूस की पहचान थीं, पर बनारसी कारीगरों ने उन्हें अपनी शैली, रंगों और धार्मिक-लोककथाओं से जोड़कर एक नई सांस्कृतिक पहचान दी। आज ये डॉल्स भगवानों, त्योहारों और बनारसी जीवन की कहानियाँ कहती हैं।

ये डॉल्स अब केवल बच्चों के खेलने की चीज़ नहीं रहीं, बल्कि सांस्कृतिक उपहार और सजावटी वस्तुएँ बन चुकी हैं। इससे न केवल बनारसी शिल्प को नया जीवन मिला, बल्कि कारीगरों को भी स्थायी आजीविका का एक नया माध्यम मिला। यह दर्शाता है कि भारतीय लोककला आधुनिकता के साथ भी अपनी आत्मा नहीं खोती।

इस शोध के ज़रिए मैं यह दिखाना चाहती हूँ कि कैसे दो भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों वाले देश– भारत और रूस, लोककला और हस्तशिल्प के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं। यह अध्ययन पारंपरिक कारीगरी में नवाचार के साथ-साथ सांस्कृतिक संवाद को भी रेखांकित करता है।

मूल शब्द: बनारस, लकड़ी के खिलौने, रशियन डॉल्स, लोककला और शिल्प, रोज़गार और सांस्कृतिक पहचान

भूमिका

भारत की सांस्कृतिक विरासत में लोककला और हस्तशिल्प की एक विशेष भूमिका रही है। हर क्षेत्र की अपनी अनूठी शिल्प परंपरा होती है जो उसकी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा होती है। बनारस, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से समृद्ध है, यहां की लोककला और हस्तशिल्प परंपरा भी उतनी ही जीवंत और समृद्ध है। 'लकड़ी के खिलौने बनाना बनारस की एक पुरानी परंपरा है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है' (Visen)। समय के साथ इस परंपरा में नए रूप और रंग जुड़े हैं, जिनमें से एक खास रूप है रशियन डॉल्स का बनारसी संस्करण, (***चित्र 1***) जिन्हें बनारसी कारीगरों ने अपनाकर अपनी कला से सजाया। 'बनारस की लकड़ी से बने खिलौनों और हस्तशिल्प को भारतीय हस्तशिल्प और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए भौगोलिक संकेत (GI) टैग प्राप्त है। यह टैग 2014 में प्राप्त हुआ,' (Lall) जो यह

सुनिश्चित करता है कि केवल बनारस के विशिष्ट कारीगर और क्षेत्र ही इस शिल्प का उत्पादन कर सकें। GI टैग मिलने से इस शिल्प को औपचारिक मान्यता और संरक्षण भी प्राप्त हुआ, जो इसके भविष्य को और भी सुदृढ़ करता है।

बनारसी कारीगरों ने रशियन मैट्र्योश्का डॉल्स से प्रेरणा लेकर उन्हें अपनी लोककला और कहानियों से जोड़कर नया रूप दिया। अब इन डॉल्स में बनारसी परंपरा के रंगों में रंगी धार्मिक कथाएँ, उत्सवों की रौनक और लोककथाओं की मिठास समाई होती है। अब ये डॉल्स देखने में तो विदेशी लगती हैं, पर उनमें पूरी तरह बनारस की आत्मा बसी होती है। यह बदलाव दिखाता है कि बनारस की कला सिर्फ पुरानी चीज़ों को नहीं संभालती, बल्कि नया भी अपनाती है और उसे अपना बना लेती है।

बनारस में लोग इन डॉल्स को 'डॉल सेट', 'फैमिली डॉल', 'सूखी परिवार' आदि नामों से भी जानते हैं। ये आमतौर पर 5 इन 1 सेट के रूप में बनाए जाते हैं।

***चित्र 1* घाट पर प्रदर्शित रशियन डॉल्स**

यह मिलन दर्शाता है कि कैसे बनारस की कला ने एक विदेशी चीज़ को अपनाकर उसे अपनी संस्कृति का हिस्सा बना लिया। इन डॉल्स के ज़रिए दो अलग-अलग संस्कृतियाँ एक साथ दिखाई देती हैं, जो न केवल देखने में सुंदर हैं, बल्कि संस्कृति को जोड़ने का एक ज़रिया भी बन गई हैं।

***चित्र 2* एम्पोरियम में प्रदर्शित डॉल्स**

बनारस में लकड़ी के खिलौने बनाना पुरानी परंपरा है। पहले के समय में यहां कारीगर हाथ से ***(चित्र 2)*** रंग-बिरंगे जानवरों, देवी-देवताओं और रोज़मर्रा की वस्तुओं के खिलौने बनाते थे। ये खिलौने स्थानीय जीवन के साथ जुड़ी कहानियों और धार्मिक मान्यताओं को प्रतिबिंबित करते थे।

लेकिन बिहारी लाल अग्रवाल जी बताते है की, 'रशियन डॉल्स बनारस में लगभग 1971 के आस-पास आयी। दिल्ली के एक व्यापारी के विदेशी ग्राहक ने

भारत से रशियन डॉल्स बनाने का ऑर्डर दिया था। दिल्ली के व्यापारी ने यह काम बनारस भेजा, जहां इसे सिल्क के दुकानदारों के पास पहुंचाया गया। बाद में यह काम बनारस के प्रतिष्ठित हस्तशिल्प केंद्र अग्रवाल टॉयज़ एम्पोरियम तक पहुँचा, जिसके मालिक स्व. नरसिंह दास अग्रवाल जी (बिहारी लाल

अग्रवाल जी के दादा) थे। उन्हीं के नेतृत्व में पहली बार इन डॉल्स का निर्माण बनारस में हुआ। आज उनकी तीसरी (बिहारी लाल अग्रवाल जी) और चौथी पीढ़ी इस कला को आगे बढ़ा रही है और बनारस की पहचान को देश-विदेश में पहुँचा रही है' (Agrawal)।

- **संरक्षण और परिवर्तन:**

रशियन डॉल्स को बनारस की लोककला के साथ जोड़ने का जो काम सबसे पहले अग्रवाल टॉयज़ एम्पोरियम ने शुरू किया, वह आज भी सहेजा जा रहा है। 'बिहारी लाल अग्रवाल जी ने बताया की आज भी उनके परिवार की तीसरी और चौथी पीढ़ी अब भी पारंपरिक तरीकों से यह कला आगे बढ़ा रही है।

'उन्होंने यह भी बताया की समय के साथ इस कला ने बनारस के अन्य हिस्सों में भी जगह बना ली है। अब सिर्फ उनका परिवार ही नहीं, बल्कि बनारस के कई अन्य इलाकों में भी लोग यह डॉल्स बनाना सीख चुके हैं। कई दुकानदारों ने अपने-अपने कारीगर रखे हैं जो इन डॉल्स को अपने ढंग से सजाते हैं' (Agrawal)। पहले जहाँ इन डॉल्स की बनावट सीधी-सादी होती थी, अब इन पर भारतीय परिवेश में सुंदर चित्रकारी की जाती है। ये अब सिर्फ बच्चों के खिलौने नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उपहार और सजावटी वस्तु बन चुकी हैं – जो परंपरा और नएपन का सुंदर मेल हैं।

इस विकास और संरक्षण को मजबूत करने के लिए बनारस के लकड़ी के खिलौनों को भौगोलिक संकेत (GI) टैग भी मिला हुआ है। जिससे इन हस्तशिल्पों की असली पहचान और गुणवत्ता बनी रहती है। इस GI टैग के तहत रशियन डॉल्स जैसे पारंपरिक खिलौने भी संरक्षित होते हैं, जो कारीगरों को आर्थिक लाभ और संरक्षण प्रदान करता है।

- **निर्माण प्रक्रिया और सामग्री:**

बनारस में रशियन डॉल्स बनाने के लिए अब यूकलिप्टस (Eucalyptus) की लकड़ी का उपयोग किया जाता है। 'पहले यह डॉल्स कोरिया लकड़ी से बनाई जाती थीं, जो विदेश से आयातित होती थी, लेकिन 1980 में सरकार द्वारा उस लकड़ी पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद से यूकलिप्टस का उपयोग शुरू हुआ' (Lall)। यह लकड़ी हल्की, टिकाऊ और आसानी से तराशी जा सकने वाली होती है।

बिहारी लाल अग्रवाल जी ने यह भी बताया की डॉल्स को आकार देने का काम टर्निंग मशीन की मदद से किया जाता है, जिससे गोल और एक के भीतर एक फिट होने वाली गुड़ियाँ बनती हैं। इसके बाद अलग-अलग कारीगर आगे की प्रक्रिया संभालते हैं।

रंगाई की प्रक्रिया पूरी तरह हाथ से की जाती है, जिसमें कई चरण होते हैं:

- सबसे पहले डॉल पर चूने की दो परतें लगाई जाती हैं।
- फिर इसे पूरी तरह सूखाकर सैंड पेपर से घिसा जाता है।
- इसके बाद एक बार फिर सफ़ेद स्तर का बेस पेंट लगाया जाता है।

- अंत में हाथ से चित्र बनाए जाते हैं – ये चित्र या तो ग्राहक के ऑर्डर के अनुसार होते हैं या सामान्यतः भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों पर आधारित होते हैं।

डॉल बनाने और रंगने का काम आमतौर पर अलग-अलग कारीगरों द्वारा किया जाता है। इस प्रक्रिया में हर कारीगर का अपना विशेष योगदान होता है, जो इस कला की अनूठी पहचान बनाता है। एक कारीगर लकड़ी तराशता है, दूसरा रंगाई करता है, जबकि तीसरा डिजाइन और चित्रकारी में दक्ष होता है। इस तरह यह कला कई कारीगरों की टीमवर्क का परिणाम होती है।

शिल्पकार समुदाय और सामाजिक संदर्भ:

बनारस में रशियन डॉल्स बनाने का कार्य मुख्यतः उन पारंपरिक कारीगर परिवारों द्वारा किया जाता है, जो वर्षों से लकड़ी के खिलौनों और हस्तशिल्प से जुड़े रहे हैं।(***चित्र 3***) इनमें अग्रवाल टॉयज़ एम्पोरियम जैसे पुराने संस्थान तो हैं ही, लेकिन अब कई अन्य परिवार और छोटे समूह भी इस शिल्प में जुड़ चुके हैं। ये कारीगर अधिकतर मध्यम या निम्न मध्यम वर्ग से आते हैं, जिनके लिए यह कला न केवल रोज़गार का साधन है, बल्कि सम्मान और पहचान का भी ज़रिया है।

चित्र 3 **अग्रवाल परिवार की तीसरी पीढ़ी**

इस शिल्प ने कई कारीगरों को आर्थिक आत्मनिर्भरता दी है, परंतु आज भी यह समुदाय कई चुनौतियों से जूझ रहा है – जैसे बाज़ार में प्रतिस्पर्धा, मुनाफा कम होना, और नई पीढ़ी का इससे दूर होते जाना।

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सामाजिक रूप से, यह शिल्प बनारस की पहचान और सांस्कृतिक विरासत का एक हिस्सा बन चुका है। त्योहारों, मेलों और सांस्कृतिक आयोजनों में इन डॉल्स की माँग होती है, जिससे कारीगर समाज का हिस्सा बने रहने और अपनी कला को जीवित रखने में समर्थ होते हैं। यह कला सिर्फ शिल्प नहीं है, बल्कि एक ऐसा सामाजिक सेतु भी है, जो पीढ़ियों को जोड़ता है और बनारसी संस्कृति को जीवित रखता है।

स्थानीय बाज़ारों में ये डॉल्स खासकर पर्यटकों, सांस्कृतिक मेलों और त्योहारों के दौरान अधिक बिकती हैं। विदेशी पर्यटक इन्हें एक पारंपरिक और अनोखा भारतीय स्मृति चिन्ह मानते हैं। वहीं भारतीय उपभोक्ता इन्हें पूजा, सजावट और उपहार के रूप में पसंद करते हैं। आजकल ये डॉल्स ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म या कारीगरों की वेबसाइटों पर भी बेची जा रही हैं, जिससे देश-विदेश में इनकी पहुँच और माँग दोनों बढ़ी है। 'बिहारी लाल अग्रवाल होलसेल में बनवाते है क्योंकि उनका मानना है की ऑनलाइन कम आर्डर आते है, कई ग्राहक इन्हें ऑर्डर पर विशेष डिजाइन में भी बनवाते हैं' (Agrawal)।

- **सांस्कृतिक समन्वय और सौंदर्यशास्त्र :**

बनारस की रशियन डॉल्स एक अनोखा उदाहरण हैं कि कैसे दो अलग-अलग सांस्कृतिक परंपराएँ– रूसी और भारतीय– आपस में मिलकर एक नई कलात्मक पहचान बना सकती हैं। मूल रूप से रूस की मैट्र्योश्का डॉल्स, जो एक के अंदर एक समाहित होने वाली गुड़ियों के रूप में जानी जाती हैं, जब बनारस आईं, तो उन्होंने यहां की पारंपरिक लकड़ी कला, धार्मिक भावनाओं और लोककथाओं से समन्वय कर लिया।

***चित्र 4* एम्पोरियम में बिक्री हेतु प्रदर्शित (दादी माँ)**

(चित्र 4) बनारसी शिल्पकारों ने इन डॉल्स को न केवल नया रंग-रूप दिया, बल्कि उनमें भारतीय आत्मा भी फूंकी। इन पर बनाए गए चित्र – जैसे राम, सीता, कृष्ण, दुर्गा, त्योहारों के दृश्य, लोकनृत्य या बनारसी जीवन की झलक – भारतीय संस्कृति की गहराई को दर्शाते हैं। शाम के समय बनारस के घाटों पर रंगीन रोशनी और शाम की ठंडी हवा के बीच, कारीगर और विक्रेता अपने स्टॉल लगाना शुरू करते हैं। लकड़ी के खिलौने, खासकर वो खूबसूरती से सजाए गए रशियन डॉल्स, विशेष रूप से ध्यान खींचती हैं।

***चित्र 5* शाम के समय बनारस के घाट पर बिक्री हेतु डॉल्स**

छोटे लकड़ी के स्टॉल पर जब ये डॉल्स करीने से सजाई जाती हैं, तो लगता है मानो घाट की रौनक को इन्होंने ही पूर्णता दी हो। बाकी खिलौनों के बीच इन डॉल्स का सौंदर्य अलग ही प्रकार की गरिमा और लालित्य लिए होता है। किसी डॉल पर साड़ी में लिपटी नारी की छवि है, तो किसी पर साधु-संत या

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पारंपरिक पात्र – मानो लकड़ी में समाया हुआ भारतीय जीवन का सम्पूर्ण सार हो।(

चित्र 5) शाम की हल्की-सी ठंडी हवा में जब पीली और नारंगी लाइट इन डॉल्स पर पड़ती है, तो उनके रंग और भी दमक उठते हैं। काजल से भरी आँखें, सजी हुई बिंदी, माथे की सिंदूरी रेखा– सब कुछ ऐसे जीवंत हो उठता है, जैसे ये डॉल्स घाट की सांध्य आरती का हिस्सा बन गई हों। उनकी उपस्थिति घाट के दृश्य को केवल सजाती नहीं, बल्कि उसमें प्राण फूंक देती है– एक चुपचाप लेकिन सशक्त कलात्मक उपस्थिति के रूप में।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ:

बनारस की रशियन डॉल्स की कला के सामने कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती है बाजार में सस्ते और मशीन से बने नकली उत्पादों की बढ़ती मौजूदगी, जो हाथ से बने असली कारीगरी वाले डॉल्स की बिक्री को प्रभावित करती है। इसके अलावा, नई पीढ़ी का इस पारंपरिक कला से दूर होना और शिल्पकारों को पर्याप्त आर्थिक सुरक्षा न मिलना भी गंभीर समस्याएँ हैं। कच्चे माल की महंगाई और सीमित संसाधन भी इस शिल्प के विकास में बाधा डालते हैं।

फिर भी, इन चुनौतियों के बीच इस कला में संभावनाएँ भी उज्ज्वल हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन मार्केटिंग के माध्यम से रशियन डॉल्स को देश-विदेश में बेचना आसान हुआ है। साथ ही, नए डिज़ाइन और विषय-वस्तु को शामिल कर इसे युवाओं और आधुनिक ग्राहकों तक पहुंचाया जा सकता है। सरकारी योजनाएँ, GI टैग का संरक्षण और हस्तशिल्प मेले कारीगरों के लिए रोजगार और पहचान के नए रास्ते खोल रहे हैं।

- **निष्कर्ष**

बनारस की हस्तशिल्प परंपरा सदियों से अपनी पहचान बनाए हुए है, और उसमें रशियन डॉल्स का समावेश एक रोचक और अनूठा उदाहरण है कि कैसे विदेशी प्रभाव भी भारतीय लोककला में घुलमिल जाते हैं। रशियन मैट्र्योश्का डॉल्स को जब बनारसी कारीगरों ने अपने पारंपरिक रंग, धार्मिक कथाएँ और स्थानीय जीवनशैली से जोड़ा, तो यह एक नई सांस्कृतिक पहचान बन गई।

यह बदलाव सिर्फ कला का नहीं था, बल्कि आजीविका, नवाचार और संस्कृति के स्तर पर भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इन डॉल्स के ज़रिए कारीगरों को न केवल नया बाज़ार मिला, बल्कि
उन्होंने अपनी पुरानी कला को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने की राह भी पाई।

बनारस की लोककला में लचीलापन, रचनात्मकता और नवाचार की अद्भुत क्षमता है। रशियन डॉल्स का यह भारतीय संस्करण परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सुंदर सेतु है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन सकता है।

सन्दर्भ

1. *Agrawal Toys*. दि.न. 14 May 2025. <https://agrawaltoys.linker.store/>.
2. Biharee Lal Agrawal. साक्षात्कार. Uma Kumari. 06 May 2025. Hindi.
3. Devyani Nighoskar. *New Lines Magazine*. 17 Sep 2021. 14 May 2025. <https://newlinesmag.com/photo-essays/the-transformative-art-of-wood-toy-carvers-in-indias-varanasi/>.
4. *Incredible India*. दि.न. 14 May 2025. <https://www.incredibleindia.gov.in/en/uttar-pradesh/varanasi-wooden-lacquerware-toys>.
5. *Leela Handicraft*. दि.न. 14 May 2025. <https://www.leelahandicraft.com/wooden-doll.html>.
6. *LOVENSPIRE*. 27 Mar 2025. 14 May 2025. <https://www.lovenspire.com/blogs/lovenspire-blog-corner/discover-charm-indian-wooden-

toys?srsltid=AfmBOoruFobYub0kFPcL6AqpgX3DJ8Io438fVBVpWtfSPg_qIAco3ctr&utm_>.

7. Mona Singh. *30Stades*. 23 Jul 2022. 14 May 2025. <https://30stades.com/2022/07/24/seven-wooden-toy-making-crafts-india-channapatna-etikoppaka-bassi-kinnal-natungram-nirmal/>.
8. Nishtha Lall. *itokri*. 11 Nov 2022. 14 May 2025. <https://itokri.com/blogs/craft-masala-by-itokri/banaras-toy-craft?srsltid=AfmBOoqxJyj7NrIRvF-Ec8_znyjjTyRGJFXsOxs_qXoZmiBKJ501HsID&utm_>.
9. Nupur Roopa. *Arts Illustrated*. 11 Nov 2020. 14 May 2025. <https://www.artsillustrated.in/art-heritage/into-the-wood-work/>.
10. Shivani Visen. *Scribd*. दि.न. 14 May 2025. <https://www.scribd.com/document/719922299/wooden-toys-of-varanasi>.
11. Sudhir Kumar. *Hindustan Times*. 18 Mar 2021. 14 May 2025. <https://www.hindustantimes.com/cities/lucknow-news/blessed-by-pm-modi-varanasi-s-wooden-toys-get-makeover-for-new-markets-101616069355661.html>.
12. *VARANASI*. 22 May 2025. 22 May 2025. <https://varanasi.nic.in/district-produce/varanasi-wooden-lacquerware-toys/>.

अनुसूची:

1. अग्रवाल, बिहारी लाल (साक्षात्कार)। रशियन डॉल्स पर जानकारी। विश्वनाथ गली, वाराणसी, 6 मई 2025
2. कुमारी, स्नेहा (साक्षात्कार)। रशियन डॉल्स पर जानकारी। सरस्वती घाट, वाराणसी, 5 मई 2025
3. रघु (साक्षात्कार)। रशियन डॉल्स पर जानकारी। नमो घाट, वाराणसी, 5 मई 2025

चित्र सूची

1. चित्र 1 घाट पर प्रदर्शित रशियन डॉल्स, स्रोत: अप्रकाशित फोटो, लेखक 'उमा कुमारी' द्वारा क्लिक किया गया 5,मई,2025 2
2. चित्र 2 एम्पोरियम में प्रदर्शित डॉल्स, स्रोत: अप्रकाशित फोटो, लेखक 'उमा कुमारी' द्वारा क्लिक किया गया 6,मई,2025 3
3. चित्र 3 अग्रवाल परिवार की तीसरी पीढ़ी, स्रोत: अप्रकाशित फोटो, लेखक 'उमा कुमारी' द्वारा क्लिक किया गया 6,मई,2025 5

4. चित्र 4 एम्पोरियम में बिक्री हेतु प्रदर्शित (दादी माँ), स्रोत: अप्रकाशित फोटो, लेखक 'उमा कुमारी' द्वारा क्लिक किया गया 6,मई,2025 6
5. चित्र 5 शाम के समय बनारस के घाट पर बिक्री हेतु डॉल्स, स्रोत: अप्रकाशित फोटो, लेखक 'उमा कुमारी' द्वारा क्लिक किया गया 6,मई,2025 7